

४ पुते
वज्र

ब्रह्मगणेश

भा

संस्कृतमो भगवत दयनकर

गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

श्रीमंगल आरम्भति
मुरति

ॐ नमो



गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

विष्णुसहस्रनाम
धर्मद्वयकलागति
वदन्त्यामृतानाम
गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम
श्रीगणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

ॐ नमो

विष्णुसहस्रनाम
धर्मद्वयकलागति
वदन्त्यामृतानाम
गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम
श्रीगणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

विष्णुसहस्रनाम
धर्मद्वयकलागति
वदन्त्यामृतानाम
गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम
श्रीगणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

सहस्रनाम
श्रीगणेशाय नमो

महात्म्य कदराम

विष्णुसहस्रनाम
धर्मद्वयकलागति
वदन्त्यामृतानाम
गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम
श्रीगणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

विष्णुसहस्रनाम
धर्मद्वयकलागति
वदन्त्यामृतानाम
गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम
श्रीगणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

विष्णुसहस्रनाम
धर्मद्वयकलागति
वदन्त्यामृतानाम
गणेशाय नमो
महात्म्य कदराम
श्रीगणेशाय नमो
महात्म्य कदराम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ स्वस्ति माता ॥ १ ॥
पानाई ॥ वाके मा ॥ धेनि ह क चंद्र मा ॥ गो ॥ ति ॥ लला जो
गो ॥ ति ॥ धे ॥ गो ॥ ॥

क्या ॥ ॥ सिव स वर्षे लत होरि ॥ धु ॥ कै लास
सै उतर दिगंबर मंदल लोक मे आइ ॥ घर वा वताये
नन्द वावा के भिक्षा लाला भिक्षा मागन आये ॥ १ ॥
भिक्षा ले निकसे नन्द रानि मोति थाल वढाइ ॥ ले
भिक्षा जो गि जावो आसन को हमोर लाला हमार
र गोपाल दराये ॥ २ ॥ नचोते दुनि जो दोल धन
चाहे तो रिमाना ॥ नुमोर गोपाला जिको वाहर रुपा
बदरसन लाला दरसन करि के जाना ॥ ३ ॥ वा
लबले निकसे नन्द रानि जो गि दरसन पाइ ॥
पाचे दफे परि छेम करि के सि गी नी नाथ वजा
इ ॥ ४ ॥ धरे जसोदा धन्दे तो रि माया ये वाल मरुम
पाया ॥ तीना हि लोक कि अंतर जपाने वाला ला
ला वाला रूप देखाइ सिव ॥ ५ ॥
गगन भजन ॥ ॥ मोहन के लवे तु वजी ॥ सब इ सुनी

के मन लल बाय ॥ देव मुनि सब पाव पाय ॥ मोहन ॥ लाला मोहन
रती देवत मु ॥ लीला ॥ क इ ल प ग ज मोती ॥ मोहन ॥ लाला
क उरु ल क ॥ १ ॥ मोहन ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥
लीला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥
लीला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥
लीला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥
लीला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥
लीला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥ लाला ॥

रागतपा ॥ ॥ वनक थोले दुन भार कोह समुद्रावतन
 दे ॥ ॥ ॥ आगे आगे राम चलतुं हें पीछे लहु मन भार ॥ ॥ दुन
 के बीच में सुंदर सोता सो मालाला माली न जाई काही स
 मुद्रावतनार ॥ १ ॥ भीतर वं माता कोल्या वाहीर मर ठ
 र भार ॥ ॥ एजा डसर ह प्रान हा त्यागे केने लाला मन ॥
 धु तोय का हो समुद्रावतनार ॥ २ ॥
 तपा ॥ ॥ स्वाम सु होरि खेतल वृज मे ॥ ॥ ॥ कित
 उत्तराधि का वच विच कृष्ण निवाहा पकरे स
 वषले ॥ ॥ पोतिस को तटे वस व मोह पु सपला
 ला पु स्या विमान चरि वे थे गगन वि च न व सरा
 नाचे ॥ १ ॥ ॥ बुवा चीन्द ननुतर गुला फरी भारि भ
 रि पि बुका भारि ॥ ॥ श्री ली मि ति का गु वर सा पर
 बले भो रे लाला भो रे बुवा म चाई कने पा तो
 र एस मदी ल मे स्वाम सु होरि खेतल होरि ॥ २ ॥
 एग ॥ ॥ क्या है वाग् वनि हे न्यारि ॥ ॥ दीले हर नि फु
 ल वारि ॥ ॥ ॥ जो म ठ व मे लि वे लान र गीज सी ड
 ती ग या धिले हर श्री फुल वारि ॥ १ ॥
 एग ॥ ॥ होकरा दर मा हु दी ल सा ॥ ॥ प्रेम पारो
 प्रिती पारो हा कु गा कन कन हा प दा करा दर
 हे भा दु दि र धा ॥ १ ॥

आशा मारवाथ
 2804
 ASHA ARCHIVES

श्री ली मि ति का गु वर सा पर
 बले भो रे लाला भो रे बुवा म चाई कने पा तो

सहस्र

(३)

गीत को की म म

सधे दू हे र

सामर हो तफा

साम से हो रि धे लौं कि वृज मे ॥ कुं ॥ बेतु ता गिर गी
उभु ना मे भी मे मेरे म्पद जोरये ॥ हात दारे प
गया बिच धाए कला ॥ पंक गये दोन पाये
सामा मे कु चोरि लगाये ॥ १ ॥

तफा ॥ ॥ आज सम सर से जो कि हो रि ॥ ॥
गोला वरुत कि र ग व मि हे तो प कि पिनु कारि
वनि हे ॥ ॥ हा कि द फु व न न ला ॥ ॥ आ गो ला हा
आ जो स म सर धे लौं कि हो रि ॥ ॥ गो म मं दू रे
जि ने मु हो बि मे जा सुन स म न भाई ॥ हा म रि जि
ते तो धा दा व स म कि तु म पर त म पर म न पे
न भाई ॥ २ ॥

तफा ॥ ॥ पि पा से ग रा ज गु माइ कि तु मारे पिनु
कारि ॥ ॥ अच त म पर मि तर से रि म गुरा
क त व र जो रि ॥ ॥ दार त के र अ ट र पा रु अ वि र
हा हा न वि र लो पे म र जो रि ॥ ॥ १ ॥

तफा ॥ ॥ नि सु दि न व र गा इ धा र दा म कि ॥ ॥
प्र थ म द रि स न ॥ क र जि कि व त भ द सु भ द ज न
ई ॥ मा हा प्र द दे व न दु र भ ज न म सु क हो ई ॥ १ ॥
दा व रि द र स न भो स म मा ॥ कि ॥ स क र ति



भनहाई ॥ लखचौरासि निहाली पोरिसकहृपाप
 भहाई ॥ २ ॥ निहारिदरी खन श्री द्वारि काना थाकि
 बरसाकी सिर लगाई ॥ संघचक्र कि ब्र पहाई से
 मकि किराहुताई ॥ ३ ॥ चौधम दरिसन श्री कदि नाथ
 की केदार नाथ लगाई ॥ रत कुं द्रुकि इलाविदु जाइ
 सिवाजि हुं द्रुये बराई ॥ ४ ॥ चारधामा चतुरि गजोरे
 द्वारि कामे धेत होरि ॥ ५ ॥ श्री श्री ॥ ६ ॥ विधादा
 रताहा मृ द्वि गव लाई ॥ ७ ॥ चारधामा नरुदरिदि
 नको श्री ने कहाई ॥ सा मुद्रये मुक्ती हरि माहा ने
 चरना रा पोरि ननाई ॥ ८ ॥ नीरुदि ननाई गव

लखनपा ॥ १ ॥ गिरु वसंत जगन्नाथ समीर सु
 उदनी ननाई ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ वनउ पवन मे
 गव उदनी पुष्प वलि कह ॥ ४ ॥ भम एउए
 मतापुल मनाई कोये लिकु क मुनाई का मीन
 मदन नृपा ॥ ५ ॥ गिरु ॥ ६ ॥ गिरु पाव पा वाव
 मतापुल मनाई कोये लिकु क मुनाई का मीन
 तकी ॥ ७ ॥ गव पाये पावु व पाव न मतापुल
 उपाय पाव लु व डी ॥ ८ ॥

लक्ष्मणनमो

(५) श्रीसरसोतिनमो

श्रीगणेशायनमो

श्रीगणेशायनमो

गणेशकी कितापहरे

वातु ॥ चेतवा चंद निरतराम चेतवा श्री वातु वातु
विती मेरो पिपा चर आई ॥ हासि हासि छुछु छुछु नि
मेरो ॥ मेरो प्रान को जो मन जो बतु गइलौ ॥ जही
नदी वो गाव के दवा के ॥ १॥ वारि गंगा पादि जमुना
विच मे परि गया फासि ॥ चेतवा चंद निरतराम ॥ २॥
राम भक्त ॥ ॥ जये नगदी वे श्री गुरु का हितर नित्री नु
वन के माहाराज ॥ श्री आदि विष जगदि सोरि जग
तजमनि प्रमे सोरि जानि नाथ पसु पाति डा घर स्वाति
करत असुति भाषव जानि ॥ नतवा गमति काम
के हासा आस पास गरोडा भैरव को गति ॥ दिप
न निरन वे प्रदात के दवि रत कत को न करन वि
जै वे ॥ २॥ भरत चंद मेजा हृदे सहि भ पर वतरा
न कि पा नी प जानि ॥ जये प्रगत निज भगत सुखा
रोर दा करे आदि भवानि ॥ ३॥ पं तर्त प्रशु रा गुरा
गरा सोह विनी प्रभु विज रावत स्वह विनि ॥ प्रा
तु प्रभु रा सोह विनि सर नि सोह विनि ॥ चतुर पा
नि ॥ भाषा प्रक श्री भुवन के चतु प्रानि प्रजा दि क
पद करहि ध्यानि ॥ मन्दा माहि च संखा सुर कानि
सोहि कारन आदि भवानि ॥ पा जये हृ पद स्ववनि
त्याहि गावे पुत्र पै न सव धन धान ॥ ४॥



राज्ञानसवप्र। प्रकरि के अंत डी प्राप्ति के सुख
 जावे॥६॥ देहि मेहि भुवने सारि प्रेक्षस दाविन
 तीद मपद गावे॥ मान गुरु प्राप्ति प्रद प्राप्ति भक्त
 चरणा कि वहु त वर इजाना॥७॥
 अस्तुति॥ जे भक्त पदे विग्रह सारि माई॥ श्री॥ नदि
 मान डी तेरे वे चरहि सेगि गंगा नलानि ल प्रह जो
 गीनी॥१॥ कपूर कि धाना मु च चंद्र कि ज्ञाति
 मगवति॥ श्री भये वर दिने सुंदरि माई॥२॥
 सिंगिनी श्री गीनी उजाति निर ग्यानि द मरु वजा
 वत भोगिनी माई॥३॥ श्रीराम बाह्य दुर साह्य वृषद
 को भक्त जग कोर का करो भोगि माई॥४॥
 राग अस्तुति॥ जगदीश भव निरे मोक्षर माया
 के जे कहते रि॥ श्री॥ पद्म के ड पर सिंघा विरु गेश
 कृती सुर विधारी॥ एत वना के को ति संभा ना
 श्री देवी माहा काटि॥ वा गंगा एनि ब्रह्मा ये नि वि
 लु विर दानि॥ ईश्वर नि प्रगत भयो हे वारा हिं
 सि वरानि॥२॥ निगहि र विजग म गतो ति वरा भ
 य कर मुक्ति॥ नर मुद्र माहा गुरु मे पै हे श्री देवी
 भिर वि काटि॥३॥ श्री भक्ति गुर ति मु जे हि विरु
 वे नर सि र पात्रा हि धारि सु भक्ति भक्ति गीनी

बागीनी वर कुमारी देवि ॥ ४ ॥ स्वेत हिरण्य निखे
 त भयानि स्वेते भैरवि वा ॥ स गुरु द नती न वदु
 गदि माय करे दित वर निपा ॥ नेम ने पाते उदि
 पति माता त्व हे श्री गुरु का टी ॥ न गव कौर द क
 रे हे र नी दा स भग को दानि ॥ ५ ॥ क हे क वि
 र सु मो भाई सा धु मे र को अ सु ति गा ना ॥ न न
 ई द्या सा प्र न हो ना ज्वा हा मु मि सि व रा न गि ॥ ६ ॥
 रा म भू सु ति ॥ ॥ सु भ ध रि सु अ दि न मि रा
 न द के हा हा भ ये ना ध दे न से दा भा ग मे रि
 गो कु ला के द ध ह रे ॥ १ ॥ वो हा ई पे द ज रा न
 जी दि न रा ना वि ये सु मे धा दे ॥ सु भ ध रि सु
 भ दि न म ग ल पु क्क के म त भ ये ॥ २ ॥ पे क
 स भ पे ह रि पु र क र न क द व न मा हि भ ये
 ॥ न न के सु त बो ध का रण कु दि न प्र ना मे
 पे ॥ ३ ॥ कु दि उ मु ना मे पे रे स व स धि
 ह रे वि ला हि धा ई पे ॥ ४ ॥ ना गि नि ना
 ग सा हे रु द न प क्क चे डा ई पे ॥ ५ ॥ कर जो
 रि ना गि कर न वि ना ति भाई वा ह भा गि के ॥ ६ ॥
 नु मा रे ध क र पा पे ना ग रि सि के भाई पे ॥ ७ ॥
 ना ग ना ग र नु म का हा गे भ व तो भा गे वा ह ध

नमो नागिरेयराया ॥ ८ ॥
ये लोको जी नमो न

॥ जो नमारे खबर पाये नागारि के आईये ॥ ६ ॥
कर जोरि नागिनि बहूत प्रभु के तार अरे सेना
करे ॥ ७ ॥ आको सह सपरि दीया दिनि वता को खबर
करे ॥ ८ ॥ पिथ धो के नागिनि नाग को जाग
नहात को ध्याप दिये ॥ सह सपुर कर कार हो
रि कलसा मगो भये ॥ ९ ॥ पक सम ये हरि मर
रिते रो गरुड के भाग्य भये ॥ गरुड आवत ना
गो देखत नाग को मुर हू भये ॥ १० ॥ कमल नये
नावि साहवा य के तदा किती आईये ॥ कर
जोरि नागि करत विनति विनति दिन हो आई
ये ॥ ११ ॥ नाग नागिनि पुजा आवत गो कुहा के दर
भये ॥ हात मे सुन कि सुवाह न नाग नागिनि जा
ईये ॥ १२ ॥ धीरे धीरे आव नागिनि भाग जो वर
पाईये ॥ सुर के प्रभु नागिनि गार म मे गल गाईये ॥ १३ ॥
रागा अस्तुति ॥ ॥ गढ़ि जेही निपधिना पाई भोग
नाथ को ॥ १४ ॥ पढ़ि ते समा सुदि सीले देव भो
लानाथ को ॥ पाच मुख हरति न जा वा सुध से तो
वरा मा ॥ धाति भलो काल कुतलो समु भोगाना
थ को ॥ हाति बहागि क मर मा वाग हला काध
मा ॥ साफ चासि को वे भुत लोग भ भोगानाथ को ॥

माई गंगा कल की नैदर सिर पे चहूर चन्द मा
॥ गन जता हो सो भी जे को माध मोलाना थको ॥ ना
गको हार सात मात दुष हर मा भगत को ॥ मि ग
पर सावे अ भिति हा थ मोलाना थको ॥ नन्दी माहि को
सवारि देव गन हूर पारि मा ॥ पार वति दुर्गा
भवानि साध मोलाना थको ॥ पारि पवि विनिग
देहि छई पैर ॥ भन्दू पै कै ठे नहु तोर भगी
मा लाना थको ॥ ७ ॥

गमन करत जवना मप्रकारो प्रथम गरो द
भु भारे ॥ ८ ॥ ठम हाम दो नो मित्रि करि के ह
वर कोरि शरी ॥ जो फल मागे सो पल पावे स
द्रको नाम प्र कारे ॥ ९ ॥ कि ति वने हे मु कुत वि
ए जो स ए पर मरु क वि राजे ॥ य क द न प्र का स
करि के सं वर कोरि शरी ॥ १० ॥ जो नर नि ने अ
सुति गावे स्यनर के दुष हरे दे ॥ विघन राज
कि मंगल गावे रवि सि धी पर पावे ॥ ११ ॥

रामा माहि ॥ सुभ के दर हो नगर दर नार निना गई
ये ॥ १२ ॥ अमल बाई भाई सा ज हो के राज होई म
थरा किये ॥ अरु ए स व मा र के माई मुद्र को
मा लाला ॥ १३ ॥ विदु पर वत माई के माई रूप गु
मन हरि दिये ॥ का ह का अवतार होई के रूप गु म
न हरि दिये ॥ १४ ॥

राग ॥ ॥ ॥ समई हू कृष्ण सदै प्रदि उनि पाठि मेने
 कसो गरि ॥ ५॥ हरिजीवन मेर नजगिदि प्रदि
 जाह न मेरो एति जदि ॥ प्रकदि न मल कदि न
 वासुदि मन रुह मेरो हरि धरि ॥ वा ॥ सव हो दिगै
 हरि ये कठौ कुटु जा के घर वस पदि ॥ वसिरात
 विताई ह न प्रे प्रगदि धेलि मोज गह न मन
 पदि ॥ २॥ सव गोविनि प्रीति जो न द धरि लुकि
 भागिदि न के से गरि ॥ आकुटुल ह न हि न
 प्रलु कफिदि आई हास दि न इस क गरि ॥ ३॥
 कुन माल ले न म पुस मई मन पुन ह न मेर
 न धरि ॥ अरु ह न प्रानि उ नै सदि के स क नै ह

५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५

राग मातृ श्री ॥ ॥ नय नो ह माता चरन सरण भ
 सम मये तारनि ॥ पुर्व दिग स्थिति प्रभाये निरे
 विकनक वरा सौरुषिनि ॥ वेद पुस्तक ह स धा
 रनि हंस वाहनि सुद ॥ वा ॥ ॥ उत्तर दिग स्थिति
 रुद्रा प्रानि देवि सेत वररा सौरुषिनि ॥ त्रि
 लोचना गि सुर धारि मा वध वाहि नी सु धरि ॥ २॥
 आगिनि दिग स्थिति कुमार देवि कुसु म वर
 न सोहापिनि ॥ असु मारनि सगती धारनि

सप्तमि तद्देहं कहेन (५५)

इति श्री लक्ष्मी नारायण

मधुरवाहिनी सुदरि ॥ ३ ॥ नैदिग्गस्थी त
विष्णुदविष्णुमवरसासोहापिनि रगतं यम
धारनीहं सवाहि सुदरि ॥ ४ ॥ दहि नदिगीस्थी
तवाहाहि देवि अरु नवरु न सोहापिनि ॥ मुद
मारनि अकुस धारनि मैषवाहिनी सुदरि ॥ ५ ॥
पहि मदिग्गस्थी तई प्राप्ता नि देवि कुमकुमव
रु न सोहापिनि ॥ मुकुतमनि मये वज्र धारनि हं
सवाहिनी सुदरि ॥ ६ ॥ पूर्वदिग्गस्थी तं चामुदा
देवि रगतवर सासोहापिनि ॥ श्रीपुर नासनि व
ज्र धारनि पंतवाहिनी सुदरि ॥ ७ ॥ ईशान
दिग्गस्थी तं माहात्म्यं देवि जोनि वरु न सोहा
पिनि ॥ असादस भुजमेवा नये नि सिधवाहि
नी सुदरि ॥ ८ ॥ अस्त मेरु वज्रसमाग्री का अ
स्त मसानवारा नि ॥ नोहे सुमरया जनमजनम
अस्त सिधे परादाहिनि ॥ ९ ॥
रागभक्तुति ॥ १० ॥ दहि नदि समे इतरा मुमय धर मे
लादे सवगा लोराजा ॥ मानवच नह मारो राजा श्री
गजहस्मापु रमे वेठ रह और सकलति हारो राजा
॥ ११ ॥ पंचपां देव कि पांचे गा इदे न डर सकल पिहा
रो राजा ॥ १२ ॥ दोत्रिकों कु लमे पाहि धर नह को

हिंजीतना कोहि हरना मान ॥ ३ ॥ राजनिमित्त मवधा
 माने गोपा च धाई न जाई रग वर कया ले छिदि व
 ये हमारा राजा ॥ ४ ॥ पकला अरु नु नहु जो ध
 न राजा सव मी गति विचारो राजा ॥ ५ ॥ धन रू
 पाति सव नि तिली पोहे विपाति मे कोहि न
 हिं हमारा राजा ॥ ६ ॥

राग ॥ १ ॥ नाथ बोले अं मरि दत्त पानि वर स त कम
 ल पा अवि नृ पानि ॥ ७ ॥ नृ पार गैया ठि पपी
 नि हालु वे मे रर का को दु द पि लाये म हतारि
 ॥ लका दु वे सिर उतारे वे मे पानि परे रि मि रा
 ॥ ८ ॥ लह सि दार प्र भु आ स चर रा को दि
 ना हरि भजन से के हो मु गत हो ग ॥ ९ ॥
 राग अरु ति ॥ १ ॥ लोक नाथ पाहुने उ धारु नि नान
 ॥ १० ॥ अरु न धाई न नु से अ नृ ती भा रि ले त स
 अ भये वर दान वि पाद ॥ अ ध्या ना ध नु स प भ
 मो छ पा स जो स आ सान व पा नि अ ~~ना~~ ना थ
 ॥ ११ ॥ क म क म नु क स क न क ति क स्वा रा कर
 न स क न कु न्द ल ॥ क रू ना म ये न क रू ना नि
 धानि क रू ना नि स्व ये जी त माला ॥ १२ ॥ म नि मा पा
 ति ला हे न म त व न ते न ति क म नि मा पा हा हा

नातिवा ॥ माहिदु नाथा मन्पा खरुप मरा
 रथपुरे पाये मारा जित मारा ॥ ३ ॥ सीदुर सु
 लोहे नसी गत्क लोपा मा ल सुषावति भवन पात
 अ ॥ सोवप्र भुववे लस सुदि स्त्री तया वे हो या
 वात बोना पने मला ॥ ४ ॥ रथस हरष नला
 लि कीति पुर रथ द नावे ज्माक ॥ रथ गज रत्न
 साहाया धान सुये द्रवि क मसा हाये व सा
 हाये वा ॥ ५ ॥   ७ ७ ७ ती ७
 राग गिर गो विन्दा ॥ तन विनु हित मपि हार
 मुदाई ॥ सावरा के कि तत नुरति भाई रा
 बिका विरहे त के रा के राव मो विन्दा ॥ धुनी
 सर सम सि न मपि हार मुदाई पक्षि निवे
 ध मि व व पुरि स स म र म ॥ सो सि त प व
 न मु नु ध म पारि ना हे म द न ह न मि व वि
 ह ति ला दा ह ॥ दि सि र कि र सि स जल कन
 जरी न पे न न हि न मि व रा प व हो लं ॥ ते ज ति
 न पा नि ल ते न क पो री वा ल सा सि न मि ल पा ण
 व जो ही ॥ न पे ना व छ प मा व डि सा हा य त ल
 प न क रा य ति वि ड तं दु र ता स न क हा प न
 ॥ अ म्मि मे  ज्म मि री का म र

हरिरिति २ जपतिस्व काम न की हा या ति
विभूतम् तासन कल्प न ॥ श्री ज्ञाने दे भवति
तमितगीध न सुष पस वतशन कल्प न
राधिका ॥ ८ ॥

॥ अतिनाहिसिधुमचरिगाभीदलचरि
॥ ५॥ श्रीगविरंगवेदीगिचरिमैनुरनर

लाप्ता पाचुरियि र्खन वरु डु भन पा ११११

प्रा. ॥ ॥ विष्णुपारं जनाङ्गि नारायण तिरि प्ररि

जोरी वने की सुंदर पीया प्यारि जानो मै वारि ॥

मेरि ज्यार नैना शे नैना भीला पे ॥ भुके भारि से

सादी दी ल्यादे नाजी स्मै गा ता की नारे प्रशाहना

॥ तत्रैव भारि सै सारि दिहा दृगा नरिम्भे गोता की

नारे मरणाहानादि ह्वरसुंदर मनहर न्यान नै

सामान्-बुद्ध्याद्योक्तान् प्रकुरुवान् ईदृशान् ॥

सगल ही निमीली बेला ही मना मना वना येव

नाये यो ॥ ॥ १॥ २॥ चाये डि धि गडा माये डा मये

बलौ ॥ धारि निग्रा पापे दीही गृहजा ही

आनी नीतानी सापवा

राग मल्लारि ॥ म आव ध सी च री धा म आव रि ॥ म त

परि २ प्रनावरि ॥ की ॥ घर घर भगन लोतन ल

चापजई से बुरीर गहों वरि ॥ १॥

उत्तम

मंजरी

सग असुति श्री सरस्यति

सरस्वति श्री दवावाजु के लताम

पितृकोकिला परमपेद हो कि हो न सुखो न लालादि सक

स्वास्ति श्री सर्वोपमाजो गपत्पादिसकल गुरा गारिष
राज भारा साम ॥ स्वास्ति श्री प्रदो जं कु मारात्म
ज श्री कम्पा दर ईनादि फर गारा लो मेम सम से
रुज दुराना वा हा दुर क से च त्रम

एक कल सिता एम कलाराम सिता हरिहर
व आदि न रजि लादि मन जि लक्ष्मी नायं धेन

लक्ष्मी स्वास्ति श्री सर्वोपमाजो गपत्पादिसकल गुरा

गदिष पुज मारा सा ॥ ६ ॥

स्वास्ति श्री सर्वोपमाजो गपत्पादिसकल गुरा गारिष

स्वास्ति श्री सर्वोपमाजो गपत्पादिसकल

गुरा गदिष पुज मारा साम ॥ ७ ॥

१००

२०

स्वास्ति श्री सर्वोपमाजो गपत्पादिसकल

गुरा गदिष पुज मारा साम ॥ ८ ॥

लीखितम् ॥ ६ ॥ का ॥ ६ ॥

म ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

लीखितम् ॥ ६ ॥ का ॥ ६ ॥

मानि हारि क पक्को मोही आन ॥ ६ ॥

पु सादि प असत सु गै डम गति मा व से पु

मा मदा ज ली ॥ १॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

स्वास्ति श्री दवावाजु के लताम

लीखितम् ॥ ६ ॥ का ॥ ६ ॥

राग अस्तुति ॥ ॥ जे ये जे ये भगवति सार नवपात्रा

॥ कुं ॥ विष्णु मति तिर र्सी अति ॥ १ ॥

राग वाचति ॥ ॥ पाहुने लो कजन तिर न सरणाः भा

व भगति तया वरे ॥ ५ ॥ नर पा आयु वनः नदि वडीति

अस्पा धिरन मधो स्पस्मा करे ॥ नरया डारमसः ध

रममर्थ स्परिः लिपात स नरक सहा तरे ॥ १ ॥ मोह

पाव स्पे गुम्यः माया नलो क पुस्पतिः ॥ २ ॥ म

स्परि ॥ ५ ॥ म मिधा न मखन रे ॥ मया क परहितः

मभापु परलोकः वनि वन रजो गरु ॥ २ ॥ वाला

चे लालपुः ॥ ३ ॥ वाह म भापु मीठ पुर व ॥ ३ ॥ ले

अया वरे ॥ वाया व ने मातः मवल थ वनापः मवल

जत्र धन सी पाति ॥ ३ ॥ गिव लः गोपुद विष्पा क धर

मस्ते धातु जोति रूप स्वयं भु ॥ वसपा सिवा पा

ये दुर्गति मध्व लिवा परल रतु लाई व स्व षावति

॥ ४ ॥ सोह ने थु गु लोकः सोह ने पर लोकः सोह ने

अर म मिधाना ॥ ५ ॥ न एक सय निगु थु गु लोक

महं ने सा भुज न पति र्पा न ॥ ५ ॥ लात ले म भा

पुः मला ई वी सनः लात पो थ थि गु सरि ॥ ६ ॥ ला

न ला ये म ज्ञा मनु अज्ञा म लात पो थ थि गु सरि

रि रे ॥ ६ ॥ माले चो ने मयः पया गु यने

दुः धनि वजर मया दुवा ली ॥ ७ ॥ मया पुत

आतः पने मफुः आतः पुवाः पनेः ५ ने मफुः

अनजनसे निमा ॥

शकलमनाथः

भावव्युत्तया भावनि

मालिनी (मालिनी मालिनी)

मालिनी (मालिनी मालिनी)

यति

शगभस्तुती ॥ १ ॥ जगदंबे शवागिरे प्रोपर

माया कयो तकरुतरि ॥ २ ॥ प्रह्लादके उ

पर ही प्यवि राने र्वि ॥ ३ ॥ गयेत्री सुतु वीधारा

॥ रगत बद्ध की जोति समा त धी देवी माहाक

ली ॥ ४ ॥ गंगारात्री ब्रह्मायनी वीधु वरदाती ॥ इति

येत्री प्रगत भये हे वारा ही ही वराती ॥ ५ ॥ नी

ल ही रुपी जगमग जोती वरे भय कर मुती

॥ ६ ॥ मरु मुद्र माता गत मये हे धं देवी ने र्वी

का ली ॥ ७ ॥ अ भुते मुती मुरवाहि नी लं बेतर

शिरणा ने ही वारी ॥ ८ ॥ सुभ नी सुभू सी ॥ ९ ॥

नि नी व्यागी नी वरे कु क मारा देवी ॥ १० ॥ स्ने

ताहि रानी स्नेते ने रवि दाती ॥ ११ ॥ सगु द्ध न धी त

डगी दा मा मरो सी वराती ॥ १२ ॥ ने म ते पा ते अदि

ती माता ने ही गु ने काली ॥ १३ ॥ म जगत निर

राग-पञ्च ॥ ॥ ति-प्रो-वि-नु-का-तु-क-र-दि-दि-न-रा-त-॥
 दे-ध-दु-यो-स-व-ज-ग-त-अ-धे-रो-॥ दे-न-क-ते-प-नि-धा-त-
 ॥ १ ॥ दि-न-दि-न-आ-सु-व-ग-ि-गे-पो-भ-ल-भ-ल-॥ सा-फ-र-सु-
 कि-सु-कि-आ-जा-॥ २ ॥ पो-दु-ष-का-हा-ग-इ-म-पो-र-व-॥
 सु-द-द-पा-ते-वा-त-॥ ३ ॥ ल-हि-ल-हि-यो-वि-र-ह-इ-दि-
 अ-व-ध-व-गे-॥ पा-ई-क-ति-दु-॥ अ-व-वा-त-॥ ४ ॥

राग-नि-गु-रा

का-दे-घो-द-र-पं-न-मे-मु-ष-रा-॥ का-दे-घो-द-र-पं-
 न-मे-मु-ष-रा-॥ नि-न-का-द-या-ध-र-म-न-हि-त-के-
 मु-ष-रा-॥ १ ॥ अ-कि-या-वा-दे-पे-त-ल-ज-मा-ना-ते-
 ल-हा-ग-ि-मु-ल-पं-न-मे-॥ ये-क-दि-न-अ-सो-सा-हो-म-
 दाने-घो-द-गा-त-न-मे-मु-ष-रा-॥ २ ॥ गे-रि-न-दि-या-ना-
 उ-पु-रा-ना-उ-ति-रा-ना-हा-हि-ये-दो-न-मे-॥ अ-र-मी-२
 स-व-पा-ई-त-री-ग-ये-प-ग-वि-दु-वे-हा-लः-मु-ष-रा-॥ ३ ॥
 अ-र-वा-रे-अ-र-हि-रा-जि-न-पा-स-रा-जि-वन-मे-॥
 वं-न-का-पा-ये-व-न-हि-मे-रा-जि-म-द-रि-ए-ज-ज-
 ल-मे-मु-ष-रा-॥ ४ ॥

अहं भस्मी वावा दोदिनकाहे वसनी ॥ श्री ॥ नौसे
 भस्म जोग वतारे भोगको नरम गुवा ॥ श्री से
 हे संसारमे वेर थाके पोद लोमसी ॥ १॥ रामभ
 जनको देह बनाया ॥ राम बनाहि कीया ॥ २॥
 सका ताकि पादा आया पिछे क्या पछुताई ॥ ३॥
 रामभजनको भुलादि पोहे प्रमत्ता परवसई
 ॥ सुख दुखकार या दुख छिड़ाये नाहक जन
 प्रगुमाई ॥ ४॥ मुख मे राम राम वगल कतारि
 कहिले के मनुवा ॥ आपस मे वगलारिहारि
 मरि गये राम सुमरना नहि जाना ॥ ५॥ प्रमा
 नंदकोहे सुनसा छु अहोमसी नहि होना ॥
 सबसे भावा प्रमसरचना राम नाम ले जाना

रागानिर्गुण

जपे भुवा ला श्री माहारना मेन नरारुण बंदु सा
 मेर जद ॥ श्री ॥ रागा वाहदुर जिसवि मिरी दोर
 आई आनु दिसी प्रल ॥ आनरे रि करे लिये फोर
 थगोर छात्र थोड ली न पीमा को ॥ १॥ काइवार स
 न प्राइ ममिती घर आइ माइने ल मुल कने पावना ग
 न माहारानिका भक्ति भक्ति समरकर सुवरी भोता
 गरक कवाया ॥ २॥ पाठ नरुह की दुखि भाई पर दुखी

ज ये तो हे माता मरन सारन अस मा मे ये तार नि पुन
दिग थी त वृक्षा मे नि देवी क त का वर न सुख मी
नी ॥ मे द पुसा करे हस्त धार नि हस्त वाहि ती सुद
र म मे हो हा ॥ १ ॥ उत्तर दीग थी त रुका मे नि देवी से तो
वर न सुख मी नी ॥ वी न हो उत्तर नीर की सुर धार नी
वी र व वाहि सु दारि त मे तो हे ॥ २ ॥ अ ज नी दीग ॥

थी त कुं मारी देवी कुस म न र न सुख मी नी

॥ अ सुख र मार नी स गाने धार नी म सु

र वाहि ती सु सु द री ज ये तो हे ॥ ३ ॥ हा ते

री प की म यी र वी सु देवी सा कुं वर

न सुख मी नी रा क द ल म न व वा

य नि ग र स द वा हो नी सु द री ज ये तो हे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

त हो ग नी त वा रा ही देवी अ न व ल न सुख मी

नी ॥ मुकु मार नि र वा कु सु धार नी मे व वा हा नी

सु द र न ये तु ॥ पा म ह नी म हो ग थी त रु का द नी

देवी कु म क म व न सु सुख मी नी ॥ मु क त म नी म ये व

ने धार नी ह स वाहि ती सु द रि ज ये तु ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

मा म हो नी र क व र न सुख मी नी ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

महाशक्ति महाशक्ति महाशक्ति

रागसह ॥ १॥ मोहि लोको नीद्रा वन निवेको ॥ श्री ॥
 मिथुदिन जमु ना नख हनु हे ॥ दरसन गोवि
 दजि को ॥ १॥ कुंज कुंज वन वन फिर राखि
 का ॥ सबद नि मुर री ली को ॥ २॥ चरधार
 ठाकुर मथुरा नगारि ॥ भोजन पुद दहि को
 ॥ ३॥ सब सखि पन मिहि नाच तगा वत ॥ मनु
 के धरे ललसि को ॥ हरि के चरण चितनि
 को ॥ ४॥

॥ १॥

॥ २॥

जपे वाला सु की नाग पूजा वागा का विष

चिं गृपा नास धन आदे स्वरि माहा देव: तुमि

नि: हिरन धोये ही ॥ देव को सपा गुरु श्री मा

रि: भावान दरसन धोये ही ॥ १॥ श्री वि

॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥

॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥

॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥

॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥

दि
१५

चंद्र 
रास ॥ ॥

(२६) ॥ ५५ ॥
वजे चला ५००१३ १६

बुलवा लासि ज को ११



लाहि श्री लो प मा जे ॥ गे लाहि

राग प की म ज न री श्री ३ ३५ ॥ २००० ॥
प्रा त पी यो रा ता रा हा मा य हा म्ये जे रा
ज्या न रो ती हा ॥ धी ॥ प्र मु के प्र त मे जो र ही
प्रा रा हा म्ये जो रा ज्या न रो ती हा ॥ १॥ ५॥ अ ग वी
भु ती म ली म ली प्वा ये व त व ज धु ती या ज
ग उ हा ते रो ली के स ज ता ई प्र मु के ता म
से वा ते हु ॥ २॥ दु ख को वे ला स ये को ह रा
ष त व त धु ती या ज ग उ ॥ ३॥ ला ति श्री ल वि प म
जे गे म ला ॥ ३॥ ल क ल ग ॥ ४॥ ध र रा ग म रा रा म र

सी धि इ मे २० ॥ ७८ ॥
५५०१६
१०३

राग रास ॥ ॥ जो गणपदावन आई अवके सेधिर जधर
॥ श्री ॥ यकस मैये विन्दावन डी धो मोहि तन गागि
गये प्यासा ॥ सी नल मधर जल आना पिछे प्रभु जि
अफ नेहान ॥ १ ॥ यकस मैये विन्दावन डी धो मोहि तन
लागी गये प्रभु ॥ यकस फल फल हरि तोरि छि
लाये प्रभु जी चरि गये रुखा ॥ २ ॥ यकस मैये विन्दा
वन डी धो मोहि बस गारि गये कटा ॥ काना सेह
रि काना निका से प्रभु जि अफ नेहान ॥ ३ ॥ य
कस मैये विन्दावन डी धो करन कुल पहिराई ॥
तव को पृती का हा गये डी धो अव न प्रजो गप
हाई न आई ॥ ४ ॥ इन हरि ह प्रसे प्रा की की
यो हे जे से मि लाज लावा रि ॥ तर कि २ जिव नी
क सन लगे बाधि पारे जान जान ॥ ५ ॥ गादा तो
दि गोरा अफना जो दा तोहि न जाई ॥ तन को मोह
न मानि के भुरति प्रभु हत वदाये अव के से
धिर जधर ॥ ६ ॥

राग डी धो तगा ॥ ॥ लागे विन्दावन नि को मोहि
॥ श्री ॥ निरमर जगु नाजी के अव वन ॥ भोजन
दुद दाहि को मोहि ॥ ७ ॥ जगु ना के निरतिर किर

तदाधिकारः ॥ सवदसुनिपुणको ॥ २॥ एतसि
 घासननाप्रविशजे ॥ मनुकधरे नृतासि कोमो
 हि ॥ ३॥ चन्द्रससिहितवाल कृष्ण भजोदरसनजे
 विन्दजि को

॥ लाला विन् गोकुल ॥ १५१८४५ ॥ १५५५ ॥
॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥
॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

८८४३३३२६७८९




 नमो वाग्विषयं ५५१०५
 गगना २७५८

२। गायत्री ॥ १४ ॥ पुरुषोत्तमस्य श्रीरामानुज जीवने ॥ १४ ॥

जै अजि ज। से बाल सने जी म फुल फुल य पार सजी तम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्रीमद्भगवद्गीता ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ यव

५१ ॥ ६॥ क म ए ञी को व द ड ये म ण उ आ णि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री हनुमताय नमः ॥ श्री लक्ष्मणाय नमः ॥ श्री सीतलाय नमः ॥ श्री जयश्री ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

मन्त्र मङ्गल ॥ ४ ॥ जे। ह। जा। ल। मा। सो। धा। न। का। व। म। च। ३
मे। व। र। ॥ ची। ना। पी। मरु। म। भ। म। द्रव। य। ॥ ५ ॥ प्र। मृ। को। डा। म। दु। रु।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रागसिद्धांजना ॥ ॥ ईच गुप्ता नारायणः ओदे स्वरि माहोदः
 बुनिभाजुदरसन पाय ह ॥ देवद को सपा गुरु श्री माहा
 मंजु धरि भगवा दरसन पाय ह ॥ १ ॥ श्री श्री धरि
 माजु भद्र मुधि घोरि नागः भगवति दरसन पाय ह ॥
 वाणा निहा कंथ नारः कुसिंष्प पापान्न मेजुः सपं
 त्रिध गिरा दोके वने ह ॥ २ ॥ भोला नाथ चोद स्वरि
 कुधामिला कठं रागः गोकरा दरसन पाय ह ॥ वि
 खनाथ चवच पुद्गलः मनिचुर दह चो सा मनिचुर
 दरसन पाय ह ॥ ३ ॥ लको दे सपा वृज गो गिनि
 सदन भोला हूयेः चगु सारां दरसन पाय ह ॥ ई
 सपा दर सति धे मि दे सपा वालो कुमांदि धोप
 दे सुजैति नां यक ह ॥ ४ ॥ भो दे सपा चो दे स्वरि नर
 उदः धर्म राजा पनति स भोला हूये ह ॥ गोदा गो
 रि भोला हूयेः विरुपं मुपा नारायणः पूर चो मा
 गुपा के वने ह ॥ ५ ॥ सुना दे सपा माहोदयः वीर स
 पा वज्र वाराहिः करुना मे दरसन पाय ह ॥ चतु
 भुज नारायण श्री गुपा जो गिनिः दधि न का लिद
 रसन पाय ह ॥ ६ ॥ धोनाथा रुद्रा यनिः तव द
 धोना मना गनिः वोरु थाया गरा द पाके वने ह
 देवद सपा वाग मे खः तपुति धा नि जल

ॐ

ॐ

(३०)

2804

ASHA ARCHIVES

साहि: केगेरचरि दरसन पाये हा ॥ ७ ॥

रागव्याचलि ॥ ॥ श्रीकरनामधे महि दुना दरसन

पाये ॥ ७ ॥ गोर घना धन: भीद्या फे नव पा
लो नं भीद्या फे न भवि ॥ नवना गते को पुसे

भासन पा नाव: द्वा दस वर्ष कामगा को ॥ १ ॥ नरि

दे देवनं वंदु दत्त साहितन कर कत वना को ॥ का

भरन गोर सजप ध्यान धा ना व: कम दत्त लोक पु

से हतारे ॥ २ ॥ राजा पाके फे नाव लोक नाथ हया

व: ने पाहास थे ने के हतारे ॥ गोघ नाथ नं भदि दु

नाथ घ ना व: दना वदरसन पाते ॥ ३ ॥ धि पु पा द

नस नव नाग व ना व: मुसु धा एपा भानं वा गात

॥ समधी वा गात का व आ हा ए वि भा व: आनं दन

लो का ध्या पाते ॥ ४ ॥ वेत का हा सो या व वापु

सात पा व: लोक नं सि ना जा पाते ॥ ५ ॥ वन मे

ना सं भस भी दि नस: धि दु पा त्र अं नं दान पाते

श्री कर नामधे महि दुना थ दरसन पाते

रागव्यान ॥ ॥ पुरुष चार सजित म

जीवते ॥ ७ ॥ वेस जी जा से वल स ये जे

पुष्य चार सजित मुदरा भाग जी वने ॥ ८ ॥

का फरषत चोता जित दुनी आ ६

५५ नं० द्वितीय भाग स्वास्ति
 १००० शारङ्ग गते दंड गते
यथा श्री गणेशाय नमो पुनर्विद्या
स्वास्ति नमो ०१ ६ ॥ ७५ श्री विष्णु काय नमो

स्वास्ति श्री लवोपमाजोपमादिलक ॥ ७० सति श्री
गुणगतिषु रामायण
 १००० ६२५ ६३
 १००० १००० २९२
 १००० १००० २९२
 १००० १००० २९२
 १००० १००० २९२



१००० १००० २९२ श्री सर स्वास्ति नमो
स्वास्ति श्री स्वास्ति श्री
 १००० १००० २९२ स्वास्ति श्री
 १००० १००० २९२ स्वास्ति श्री

१००० १००० २९२ स्वास्ति श्री स्वास्ति श्री
स्वास्ति श्री स्वास्ति श्री
 १००० १००० २९२ स्वास्ति श्री स्वास्ति श्री
 १००० १००० २९२ स्वास्ति श्री स्वास्ति श्री

